वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

(फेसबुक व यू–ट्यूब लाइव)

"झारखण्ड की शैलकला"

(२५ अगस्त, २०२०)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

वृत्तचित्र स्क्रीनिंग

"झारखण्ड की शैलकला"

मनुष्य सदैव से स्वयं के कार्यों व उपलब्धियों को अपने आने वाली संततियों के लिए संरक्षित करने के लिए प्रयासरत रहा है जिन्हें उसने चरणबद्ध चरण उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से संजोया। मानवीय संस्कृति व सभ्यता के विकास के इन विभिन्न चरणों के प्रागैतिहासिक व ऐतिहासिक प्रमाण विभिन्न रूपों में प्राप्त होते है यथा प्रस्तर उपकरण, मृदभांड, धातु उपकरण, शैलचित्र कला, अभिलेख, ताम्रपत्र लेख –भोजपत्र लेख आदि। प्रागैतिहासिक कालीन प्रमाणों में शैलचित्र कला अतिमहत्वपूर्ण प्रमाण है जो शब्दरहित होते हुए भी तत्कालीन मानवीय क्रिया–कलापों का यथार्थ दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि दृश्य विभाग द्वारा पूर्वजों की इसी धरोहर को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भारत के विभिन्न राज्यों में सर्वेक्षण व अभिलेखन का कार्य किया जा रहा है तथा जनमानस में इसके प्रति जागरुकता के लिए उनका प्रदर्शन विभिन्न प्रदर्शनियों व वृत्तचित्रों के माध्यम से कर रहा है। इसी कड़ी में आदि दृश्य विभाग द्वारा दिनांक 25 अगस्त, 2020 को 'झारखण्ड की शैलकला' पर वृत्तचित्र का प्रदर्शन फेसबुक एवं यू–ट्यूब के माध्यम से किया गया।

वृत्तचित्र का ऑनलाइन विमोचन, बाँए से क्रमशः डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी (सदस्य सचिव, इं0 गा0 रा0 क0 कें0), प्रो0 बी0 एल0 मल्ला (विभागाध्यक्ष, आदि दृष्य विभाग) एवं श्री विजय रील (ओ0 एस0 डी0, सदस्य सचिव)

भारत की शैलकला को भौगोलिक परिदृश्य, अंकन तकनीक व विषयांकन आदि की दृष्टि से 6 प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया गया है– उत्तरी भारत, पश्चिमी भारत, पूर्वी भारत, पूर्वोत्तर भारत, मध्य भारत एवं दक्षिण भारत। झारखण्ड पूर्वी भारत क्षेत्र के अंतर्गत है जो सघन वनों, वनस्पतियों, खनिज संसाधनों आदि से परिपूर्ण हैं। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में निवसित जनजातियाँ वर्तमान समय में भी अपनी आदिम संस्कृति को जीवंत रूप में संजोये हुए हैं। झारखण्ड के पहाड़ियों से अनेक शैलाश्रयों की प्राप्ति होती है जिसमें अधिकांश में शैलचित्रों की प्राप्ति होती है, कुछ स्थानों से उत्त्कीर्णित शैलकला के भी प्रमाण प्राप्त होते हैं। झारखण्ड के हजारीबाग, चतरा, गिरीडीह, कोडरमा, लोहरदगा, रामगढ़, गुमला, रांची, पलामू एवं खुनती जनपदों से शैलकला के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत वृत्तचित्र में हजारीबाग एवं चतरा जनपद के शैलकला पुरास्थलों, यथा– इसको, सिदपा, नौतंगवा, मंडेर, थेथांगिर, गोंडा आदि को प्रदर्शित किया गया।

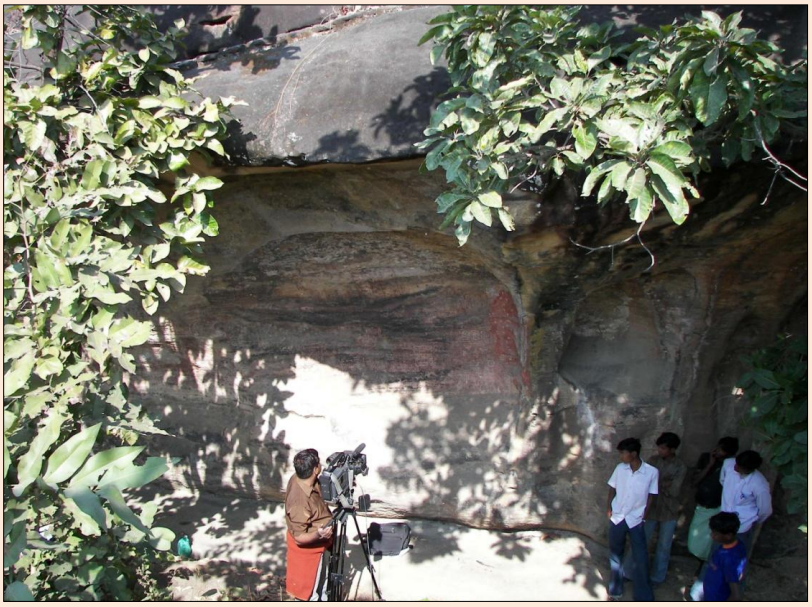

इसको शैलचित्र पुरास्थल, हजारीबाग, झारखण्ड

यहाँ से प्राप्त शैलचित्रों की प्राचीनता मध्यपाषाणकाल से लेकर ऐतिहासिक काल तक है। यह शैलचित्र लाल, पीले व श्वेत रंग के हैं। लाल रंग के लिए हेमेटाइट पत्थर, पीला रंग के लिए लिगनाइट और श्वेत रंग के लिए चूना पत्थर का प्रयोग किया गया है। अनेक स्थलों पर चित्रों में द्विरंगी या फिर मिश्रित रंगों का प्रयोग किया गया है। अंकित विषयांकनों में विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय अलंकरणों की अधिकता है जिसमें त्रिभुजाकार, चौकोर, जिगजैग रेखाएं, लहरदार रेखाएं आदि है, इसके अतिरिक्त मानवांकन, पशुअंकन, आखेट दृश्य, वनस्पतियों के अंकन, खगोलीय प्रतिकांकन (सूर्य, चन्द्रमा, सकेंद्रित वृत्त), जीव–जंतुओं का चित्रण आदि प्राप्त होते हैं।

ज्यामितीय अलंकरण, रहम, चतरा

ज्यामितीय अलंकरण, इसको, हजारीबाग

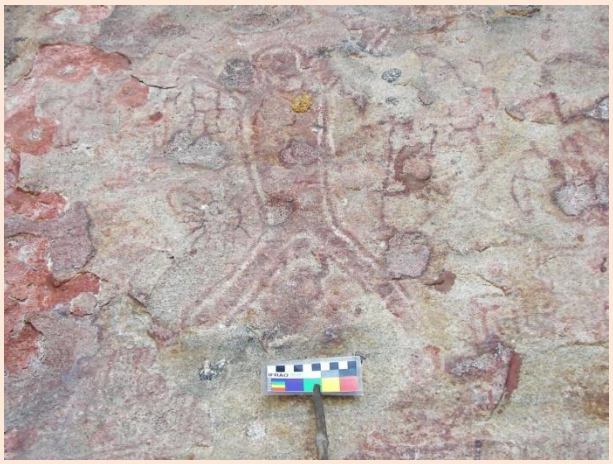

मानवांकान, इसको, हजारीबाग

पशुअंकन, इसको, हजारीबाग

सूर्य अंकन, इसको, हजारीबाग

गोधानी चित्रण, थेथांगिर, चतरा

वृत्तचित्र के अंतर्गत सर्वेक्षण व अभिलेखन के दौरान किये जाने वाले नृजातीय अध्ययन के विषय में भी दर्शाया गया जिसमें श्री बुलू इमाम जी (झारखण्ड राज्य समन्वयक) ने इसको शैल कला पुरास्थल के ताम्राश्मीय कालीन शैल चित्रों को समीपवर्ती ग्रामीण अंचल में निवसित मुंडा जनजातीय के घरों के दीवारों पर बने चित्रों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर पुराकाल से वर्तमान तक इस कला के जीवंत रूप में निरंतरता पर प्रकाश डाला।

नृजातीय अध्ययन, जनजातीय निवास पर भित्तीचित्रण, भेलवाड़ा, हजारीबाग

श्री बुलू इमाम जी द्वारा जनजातीय निवास के भित्तीचित्रण का शैलचित्र के साथ तुलनात्मक अध्ययन

वृत्तचित्र के माध्यम से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी जी ने भारतीय शैलचित्र कला की समृद्ध विरासत पर तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा इस क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ ही, माननीय सदस्य सचिव जी ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों आदि को अपने पूर्वजों के इन धरोहरों को संजोने व आम जनमानस में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सहयोग करने की अपील की।

आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला जी ने झारखण्ड के शैलकला के तकनीक, विषयांकन आदि के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

उपरोक्त वृत्तचित्र के माध्यम से अधिकतम विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों आदि को जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, शैक्षणिक संस्थानों तथा संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि से सम्बंधित अनेक संस्थाओं को ई@मेल, वाट्सअप, ट्विटर, फोन आदि के माध्यम से अवगत किया गया फलतः लगभग 100 से अधिक लोग फेसबुक लाइव जुड़े तथा बाद में IGNCA फेसबुक पेज पर लगभग 2000 एवं यू–ट्यूब पर लाइव लगभग 100 लोग जुड़े तथा अपलोड होने पर लगभग 300 लोगों ने देखा व सकारात्मक प्रतिक्रियाऐं दी। वृत्तचित्र से सम्बंधित रिपोर्ट को IGNCA की वेबसाइट पर अपलोड किया गया तथा विहंगम पत्रिका के लिए लेखन किया गया। वृत्तचित्र को यू–ट्यूब पर भी अपलोड किया गया है।

यू–ट्यूब लिंक– https://www.youtube.com/watch?v=YkRH3jmYNfQ

IGNCA फेसबुक पेज
https://www.facebook.com/IGNCA/videos/1668137800024082/?__so__=channel_tab&__rv__=all_videos_card

आभार

उपरोक्त वृत्तचित्र का आयोजन इं० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव प्रो० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बंशी लाल मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, सुश्री सुपर्णा डे एवं श्री प्रमोद कुमार आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका। अंततः संचार केन्द्र (इं० गाँ० रा० क० के०) का कोटिशः धन्यवाद जिनके सहयोग से वृत्तचित्र को डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रदर्शन करने हेतु स्वरूप प्रदान किया जा सका।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

श्रीमती रीता रावत
परियोजना सहायक
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली